डा० लक्ष्मीनारायण लाल

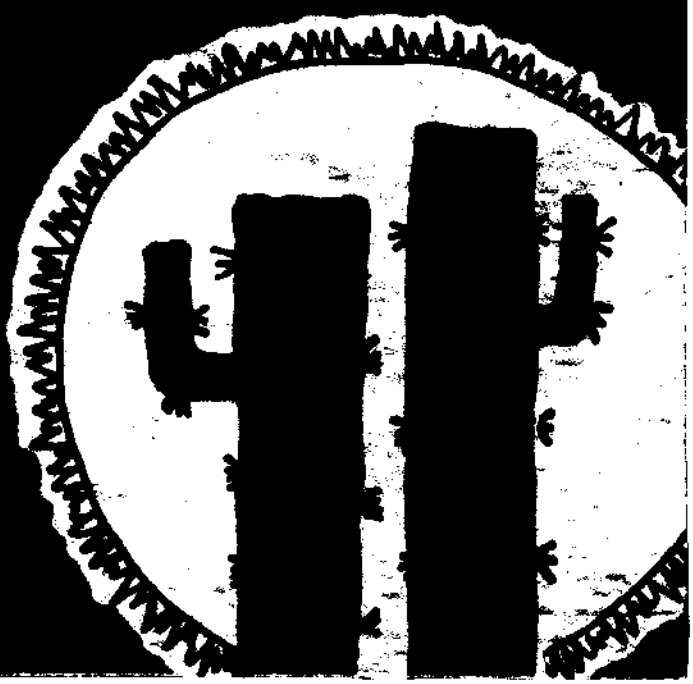

'कथा विसर्जन' नाटक के अभिनय-प्रदर्शन, अनुवाद, प्रसारण, रूपांतर तथा फिल्मीकरण आदि के लिए इसके लेखक लक्ष्मीनारायण लाल की लिखित पूर्व-अनुमति अनिवार्य है।

पता : 54 ए, एम० आई० जी० फ्लैट ए-2 बी,
पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-110063

किताब घर
गांधी नगर दिल्ली-110031

कथा विसर्जन

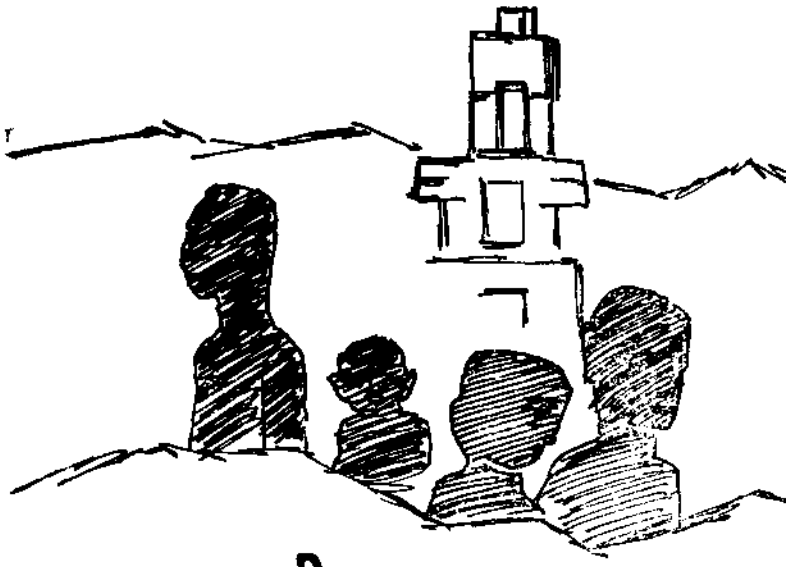

डा० लक्ष्मीनारायण लाल

© लेखक

प्रकाशक
किताबघर
मेन रोड, गांधी नगर, दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
1987

मूल्य
पन्द्रह रुपये

मुद्रक
चोपड़ा प्रिंटर्स, मोहन पार्क
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

KATHA VISERJEN (Hindi Play)
by Dr. Laxminarayan Lal Price : Rs. 15.00

इलाहाबाद नाट्य केन्द्र के मेरे प्रथम
शिष्य और अब मित्र
श्री जीवनलाल गुप्त को
सप्रेम भेंट।

रंगमंच नहीं रंगभूमि

आज जब अपने रंगमंच नहीं, रंगभूमि का तनिक बोध हुआ तो अब नाटक लिखते समय बड़ी पीड़ा से गुजरना पड़ता है। जिस मंच पर अपने-आप को लिए जा रहा था, अनुभव हुआ कि यह तो नकली है। असली तो अपनी ही 'वस्तु' होती है। वह है रंगभूमि—अपनी 'भूमि' का 'रंग' और वह कितना बेघर है—यह दर्द टीसता रहता है। उसी पीड़ा ने मुझे दिखाया है कि पश्चिम की आधुनिकता ने हमारी रंगभूमि को कितना उखाड़ा है और बेघर किया है। और बेघर किया है आधुनिक रंगमंच के नाम पर। पश्चिम का आधुनिक रंगमंच मेरी समझ से पश्चिमी संस्कृति का सूर्यास्त काल है। जो उसके ह्रास के चरम बिन्दु हैं, उनको महिमा-मंडित कर हम आधुनिक काल कहते हैं और अपने भारत देश, भूमि की उपेक्षा कर रहे हैं। जहां इस कदर उखड़े और बेघर होने के बावजूद अभी कुछ जीवन बचा हुआ है, कुछ परंपरा बची हुई है। उखड़े होने का यही सबूत है कि हम अपने बचे हुए जीवन और परंपरा को अनदेखा कर रहे हैं।

आदमी बेघर, बेभूमि तभी होता है जब वह अपनी संस्कृति से उखाड़ा जाता है। जब वह अपने जीवन-स्रोत से कटता है। आधुनिकता ने इसी धरातल पर हमें उखाड़ा है। उन्नीस सौ सैंतालीस तक वह प्रक्रिया पूरी कर उन्होंने हमें स्वतन्त्र नहीं, आजाद करके यह कहा कि भारतवर्ष में अपना कुछ रहा नहीं। अपना कुछ कर सकने की संभावना भी नहीं रही, इसलिए हमसे सीखो। हमसे लो। और नाटक रंगमंच के जितने प्रकार

सम्भव हैं, जितनी विषयवस्तु चाहिए, हमसे लो। और नए-नए नाटक लिखो। भूल जाओ अपनी नाट्य और रंग परम्पराओं को। हमसे लो। हमारा काम करो।

जब तक अपनी संस्कृति थी, हमसे ऐसी बात कोई नहीं कह सकता था। जब तक अपनी संस्कृति थी तब तक सबका जीवन, कला, धर्म साहित्य, पूरा विराट जीवन हमारे भीतर परिव्याप्त था। हमें अपनी कला, अपनी प्रतिभा समझने में जरा भी देर नहीं लगती थी। नाटककार के आसपास अभिनेता, रंगकर्मी, दर्शक समाज, सब एकजुट थे। रंगमंच नहीं रंगभूमि का प्रत्येक अंग, नाट्य का हर पक्ष एक-दूसरे में परिव्याप्त था। कहीं कोई बाधा नहीं थी। क्योंकि संस्कृति अबाध थी। नाटककार जिस शब्द, जिस प्रतीक, जिस भाव और विचार को अपने नाटक में प्रयुक्त करता था, उसे सहज ही सब लोग समझ लेते थे। समझ से भाव, भाव से रस। पर आज जब अपनी संस्कृति नहीं है, तब नाटक लिखना कितना संकटपूर्ण काम है। नाटक और रंगभूमि के सारे अंग बिखरे हैं। नाटककार कहीं, अभिनेता कहीं, दर्शक कहीं। सबकी भाषा का अर्थ अलग-अलग। तब कैसे हो नाटक? किस भूमि पर हो?

जब अपनी संस्कृति थी, तब स्वभावतः उसकी अपनी भाषा थी। भाषा के माध्यम से सारी जीवन-ऊर्जा, साहित्य, कला, मनोरंजन के सारे प्रकार उसी संस्कृति से सहज ही फूटते-निकलते थे। सारा समाज उसी संस्कृति से जुड़ा-बंधा था। नाटककार, अभिनेता, रंगकर्मी, दर्शक समाज सब परस्पर एकाकार थे। अभिन्न थे। जोड़ने वाला वही एक तत्त्व था—अपनी संस्कृति। संस्कृति से समाज को जोड़े रखने में मुख्य थी 'कथा'। नृत्य, संगीत, नाटक, मूर्ति-स्थापत्य कला, लोगों का मिलन-जुलन, कर्म, दुःख-सुख सबके बीच में वही कथा-सूत्र था।

हमारे नाटक का मूल, कथा। कथा में ही नाटक का वस्तु। वस्तु में पात्र। पात्र उसी वस्तु को धारण करने वाला। पात्र से ही अभिनेता दर्शकों को रस पिलाता था। और दर्शक एकात्म हो पीते थे।

यह कैसे सम्भव होता था?

वहीं संस्कृति सम्भव कराती थी। सारे तार जुड़े थे, इसलिए बिजली

चारों तरफ धड़ से पहुंच जाती थी। लोग अकेले-अकेले नहीं थे, पूरे समाज थे। इसलिए एक ही कथा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, सौराष्ट्र से लेकर अरुणाचल-मेघालय तक समान रूप से प्रचलित थी—इतनी अलग-अलग भाषाओं और बोलियों के बावजूद।

संस्कृति क्या है? अपने जीवनमूल्यों की सनातनता, अबाधता। जैसे गंगा नदी, हिमालय पर्वत, हमारी कथाएं, हमारे सनातन पात्र और विश्वास।

मैं यहां केवल कथा की ही चर्चा करता हूं। सांस्कृतिक संदर्भ में कथा क्या है? कथा है। यह गढ़ी या बनायी नहीं जाती। गढ़ी-बनायी जाती है कहानी, 'प्लाट'। कथा समाज है, सामाजिक है। कहानी 'मैं' है। कथा में समय काल है। कहानी या 'प्लाट' में समय बीतता रहता है। कथा जीवन और समय की लीला है। उसके विपरीत कहानी जीवन और समय का मालिक बन ऐंठकर चलती है। और कहती रहती है कि देखो, मैं ही हूं केवल। कथा हमारे भीतर से गुजरती है और क्रीड़ा भाव से मुस्कराती है। कहानी का स्रोत इतिहास है। कथा का स्रोत जीवन की सनातनता है। कहानी यथार्थ का अहंकार है। इसीलिए कहानी में न आदि है न अन्त। कथा का आदि है, कथा का समापन है। कथा का सुमिरन है, कथा का विसर्जन है।

वही कथा हमारी परम्परा है, जो इतिहास और कहानी की तरह सीधे न चलकर पूरे चौक और वृत्त में घूमती है।

हजारों साल पुरानी भारतीय संस्कृति को जब एक ऐसी संहारी ध्वंसात्मक, लोलुप सभ्यता का सामना करना पड़ा था, जो प्रगति और आधुनिकता के नाम पर हमारी परम्परागत दृष्टि को नष्ट कर रही थी, तो हमारे पुरुखों ने अपनी इसी 'कथा' को उस विनाश में भी सुरक्षित रखा।

कथा नाट्य के स्थान पर पश्चिमी 'ड्रामा' आ गया। कथा रंगभूमि का अभिन्न दर्शक 'ड्रामा' का गूंगा गवाह हो गया, जिसके सामने एक ऐसा ड्रामा खेला जा रहा था जिसकी भाषा तक वह नहीं जानता था। जिस पर उसका कोई अधिकार नहीं था। पर वह और हम सब उस ड्रामा से

आक्रान्त थे, क्योंकि वह आधुनिक था। क्योंकि उसका रंग शिल्प और नाट्य कला दोनों ही हमारे लिए अजनबी थे।

यह कैसी विडम्बना है कि मैं उस 'ड्रामा' का मूक गवाह हूं, जिसने पिछले दो सौ वर्षों से मेरी संस्कृति, मेरे कथा-नाट्य की लय और गति को तोड़ दिया, पर अपनी कथा की रंगभूमि का दर्शक नहीं रहा, तभी तो दूसरे का मूक गवाह हो गया।

इसीलिए नहीं कि मैं भारतीय हूं, भारत का नाटककार हूं, मेरा यहां जन्म हुआ है, बल्कि मेरा सारा दुःख-दर्द इसलिए है कि अपने समस्त भारत प्रेम के बावजूद मैं भारत से उखड़ा हुआ हूं। और मूक दर्शक की तरह देखता हूं कि उस उखड़ने के बावजूद अपने अवचेतन जगत् से ही सही, अपने नाट्य-कर्मकाण्ड और रंगभूमि के मिथक-संसार से न जाने कैसे कहां जुड़ा हुआ हूं।

सम्भवतः रंगभूमि की कथा की यही भूमिका है। कथा-सुमिरन ही हमें यह बोध देता है कि हममें यदि इतिहास बोध का अभाव है तो उसका कारण हमारी विशेष संस्कृति है—जहां अतीत और वर्तमान अलग-अलग स्वायत्त खण्डों में विभाजित नहीं हैं। जैसे कि समस्त यूरोपीय निवासी पूरी तरह से और उसकी थोपी हुई आधुनिकता के प्रभाव में वर्तमान शहरी भारतवासी दुविधा के साथ महसूस करता है कि अतीत से वर्तमान बिल्कुल अलग है।

पर यहीं एक गम्भीर रहस्य छिपा है, जिसका बोध मुझे हुआ, प्रसिद्ध समाजशास्त्री, निर्मल बुद्धि के धनी मेरे मित्र प्रोफेसर ब्रह्मदेव सोनी के सत्संग से। यूरोपीय अपनी इतिहास-दृष्टि से देखता जरूर है कि अतीत और वर्तमान अलग-अलग स्वायत्त खण्डों में विभाजित हैं, पर वह सांस्कृतिक रूप से जीता है अपनी सनातनता में, क्योंकि उसकी संस्कृति आदि से उसके वर्तमान तक अबाध है। रोमन से लेकर क्रिश्चियन, रेनेशां और उन्नीसवीं सदी तक उसकी संस्कृति अकाट्य रूप से फलती-फूलती रही है। वे हमें योजनापूर्वक बेवकूफ बनाते हैं कि प्राचीन और आधुनिक अलग-अलग हैं। पर स्वयं वे जितने आधुनिक हैं उतने ही प्राचीन हैं। क्योंकि उनकी संस्कृति कभी टूटी नहीं है। वह सदा जीवित रही है। मार्क्स और फ्रायड के दर्शन

में रोमन, क्रिश्चियन, रेनेशां के तत्त्व मौजूद हैं। इसी तरह आइनेस्को और ब्रेख्ट के नाटकों में रोमन, ग्रीक और एलिजाबीथन रंगमंच के तत्त्व विद्यमान हैं।

यूरोप ने हर कीमत पर अपनी संस्कृति जीवित रखी। उसी सांस्कृतिक शक्ति से उन्होंने दूसरों की संस्कृतियां नष्ट कीं। हमें अपनी संस्कृति से उखाड़कर उन्होंने हमारी सूखी जड़ पर आधुनिक 'इकेबाना' की फूल-पत्ती सजाने की कोशिश की। यही है भारतवर्ष की आधुनिकता और आधुनिक ड्रामा।

सूखे-कटे-टूटे मूलजड़ पर कभी कोई बीज अपनी जड़ बो देता है। कुछ भारतीय वृक्ष की टहनियां और कुछ पौधे ऐसे होते हैं जो सूखे, उजाड़ भूमितल पर तनिक-सी आर्द्रता और ऊष्मा के सहारे अपनी जड़ जमा लेते हैं। अपने सांस्कृतिक संदर्भ में, अपनी रंगभूमि में कथा का बीज-रोपन वही प्रयास है।

अपनी कथा का सुमिरन, 'कथा विसर्जन' है। कथा मैंने नहीं कही। कथा से 'मैं' का कोई सम्बन्ध ही नहीं हो सकता। कथा तीन धरातल पर सम्भव है—देवता, मुनि और पंछी। नाट्य में नट-नटी के धरातल पर कथा कही नहीं जाती, कथा दिखाई जाती है। तभी इस नाट्य के दर्शक समाज में देवता, मुनि, पंछी, मनुष्य सब एक साथ बैठते हैं।

यह कल्पना कही जाएगी आज। बल्कि कठिन कल्पना। नट-नटी से वर्तमान नाट्य को जोड़ना अपनी परम्परा से जुड़ने का प्रयास है। यह प्रयास उस समय जब भीतर और घर पर 'बाहर' इतना हावी है। जब यथार्थ के आगे कथा बगली झांक रही है। जब पश्चिम हम पर पूरी तरह से सवार है।

'कथा विसर्जन' नाट्य को अपने साथ लिए हुए नट-नटी हमें क्रीड़ा-भाव से देखकर मुस्कराते हैं, देखो यह वही रास्ता है, जिस पर से हम कितने सौ साल पहले गुजरे थे। यहीं हमारी वह भेंट हुई थी। यह स्मृति का खेल नहीं है, यही हमारा नाट्य है। 'कथा विसर्जन' और आवाहन दोनों एक हैं, जैसे संस्कृति और नाट्य कर्म एक हैं।

यह बात आज तब कहना कितना आश्चर्यजनक और पीड़ादायक है,

जब अपनी संस्कृति ही न हो। इससे कितना संक्रान्त होता है अपने भीतर। हमें ऐसे ही क्षणों में अनुभव होता है कि जो हमें परम्परा से दिया गया है वह, और जो अनुभव हमें अपनी पीड़ा से होता है, दोनों से हम स्वयं परम्परा बनते हैं—अर्थात् परम्परा हममें आकर परिव्याप्त हो जाती है। और हमीं से परम्परा आगे बढ़ती है।

'कथा विसर्जन' नाटक को अपनी परम्परा से इसीलिए जोड़ सका कि इस नाटक की मूल मात्र 'मां' अपनी जड़ों से जुड़ी थीं। उनमें आत्म-उन्मूलित होने का किसी प्रकार का अनाथ भाव नहीं था।

'कथा विसर्जन' से अपने मूल से जुड़ाव की स्मृति का सारा श्रेय इस नाटक की मां को है। उन्होंने ही गुरु बनकर दिखलाया। मैंने कुछ नहीं देखा, क्योंकि देखने वाला समष्टि के साथ अपनी रंगभूमि पर एकात्म हो चुका।

नई दिल्ली
13 जुलाई, 86

—लक्ष्मीनारायण लाल

कथा विसर्जन

'कथा विसर्जन' का प्रथम प्रस्तुतीकरण, 'हस्ताक्षर' नई दिल्ली द्वारा चार मार्च, 1986 को हिन्दी रंग दिवस पर, गांधी मिमोरियल हाल, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली, सायं सात बजे सम्पन्न हुआ।

भूमिका में : शकुन सक्सेना, सागर विश्नोई, अंजलि सक्सेना, अरुण भल्ला, अलका मदान, राजेश तिवारी, सुषमा डोगरा, राजेश आहूजा, सबीन सेतिया, मदन डोगरा, गुरुबख्श सिंह, कृष्ण कुमार दत्ता, मनोज गुप्ता, रजत कुमार, मनोज सक्सेना, सतीश छाबड़ा, कैलाश भारती, हृदेश कुमार, अशोक सनोतरा और आदर्श अरोड़ा।

संगीत : के० सी० निमेष, मंच व प्रकाश : लईक हुसैन

निर्देशक : शेखर वैष्णवी

पात्र

मां
प्रकाश
नीलम
नाथू
गोपी
शोनू
आशा
सेठी और
गांव के लोग

पूर्व रंग

[पृष्ठभूमि से पहले स्त्री-पुरुष, फिर समवेत स्वर में गाते हुए लोगों का रंगभूमि पर आना।]

उस माता को भूल न जाना
भूल न जाना भूल ना जाना
जिसने हमको जन्म दिया
उस माता को भूल न जाना
पाल-पोस कर बड़ा किया
उसी ने हमको ज्ञान दिया
भूल ना जाना भाई, भूल ना जाना

[प्रकाशचन्द्र का प्रवेश।]

प्रकाश : यह क्या तमाशा है ?

[घर के भीतर से नीलम, मां, शोनू और आशा का प्रवेश।]

प्रकाश : जो कहना हो, सिर्फ एक आदमी खड़ा होकर अर्ज करे।

पहला : ललई बाबू, कहों साहेब से।

दूसरा : साफ-साफ।

तीसरा : कौनो लाग-लपेट नाहीं, हां।

चौथा : इहां कौनो डर नाहीं। अपनी जनम भूमि की मांजी साक्षात् खड़ी हैं। धन्य हैं, ऐसी मां।

ललई : सरकार, हम पंचन सरजू नदी की बाढ़ से तबाह होइ गए हैं। गांव नटुआ, जिला बस्ती···।

प्रकाश : बस बस यस, ये केस मुझे मालूम है। मांजी भी याद दिलाती रहती हैं। उस इलाके के एम० एल० ए० से हमारी कई मुलाकातें हो चुकी थीं।

पहला : हमारी ? कौन हमारी ?

ललई : बीच मां टप से ना बोलो—'डिसपिलपिन' मां रहो। हां, सरकार, बतावल जाए।

प्रकाश : बाढ़ नियंत्रण विभाग के साथ हमारी तीन बैठकें हुई थीं।

दूसरा : हमारी, कौन थे हमारे ?

ललई : फिर वही गंवई गांव मघोचर।

प्रकाश : हां, हां, रोको नहीं, पूछने दो। सुनो, एक मैं, दूसरे सेक्रेटरी सेठी साहब, तीसरे बाढ़ नियंत्रण विभाग के वर्मा जी।

तीसरा : हूं। सेठी साहब कौन हैं ? इनके बारे में ई जो अखबार में निकला है ?

ललई : चुप रहो, साहेब को बोलने दो।

प्रकाश : हमने बहुत प्रयत्न किया। साढ़े तीन लाख सरकार से मंजूर हुआ।

पहला : दुहाई सरकार की, साढ़े तीन लाख नहीं, पूरे पांच लाख !

[प्रकाश का अपने आस-पास खड़े शोनू, आशा, मांजी को वहां से हटा देना। केवल नीलम और प्रकाश रह जाते हैं। पर शोनू छिपकर सब कुछ देख रहा है।]

नीलम : आप लोग कुछ जलपान कीजिए।

[प्रकाश और नीलम के बीच कोई गुप्त वार्ता]

पांचवां : सुना है आप और सेठी साहब डेढ़ लाख रुपए··।

पहला : हां अखबार में भी निकला है, ई देखिये।

ललई : बेकार की बात मत करो। सरकार ! ई नट और ई नटिनी हैं। इनका पूरा गांव बहि गया बाढ़ में। ई कलाकार हैं, भूखों मर रहे हैं। इन्हें कोई नौकरी मिल जाय तो···।

[प्रकाश और नीलम में फिर गुप्त वार्ता।]

प्रकाश : आप कहते हैं तो कोई बन्दोबस्त कर देता हूं।

[प्रकाश और नीलम का भीतर जाना। मारे प्रसन्नता के नट-नटी का नृत्य गायन।]

जानी जानी तोरे मन की बात।
सांवरे नंदजी के घर जाऊं
गारी दूंगी, गारी दूगी, हमसे न बोलो
का परो है तेरो डर।
जानी जानी तोरे मन की बात।

[सबका गाते हुए जाना। अंधकार। फिर रोशनी। नट-नटी के सामने अब वही तीन जन, नीलम, प्रकाश और मांजी।]

नट : सरकार, हमें नौकरी से हटा दिया गया।

नटी : गाना-नाचना विभाग में हमें नौकरी मिली थी सरकार ! मगर हमें डियूटी मिली सेठी साहब के बंगले पर। ये खाना बनाते, नौकर का काम करते। मैं झाड़ू, पोंछा, चौका-बर्तन···।

[छिपकर शोनू खड़ा है।]

नीलम : ठीक है, तुम दोनों की नौकरी हमारे यहां।

प्रकाश : इनकी जात-पांत तो पूछ लो।

मां : जिसे अपना लिया उसकी जात-पांत नहीं पूछते।

[सबको अपने साथ लेकर मांजी का घर के अन्दर जाना।]

प्रथम अंक

[पृष्ठभूमि से वाद्य संगीत । नट नाथू, नटी गोपी, भगवान ठाकुरजी के सामने दीप जलाते हैं और पूजा करते हैं । फिर दर्शकों के सामने गायन ।]

दर्शन के प्यासे नयन, लगे तुम्हारी ओर ।
कथा विसर्जन हो रहा, बांध प्रेम की डोर ।।

[संगीत]

हो गई शाम नहीं आए री कन्हैया
हो गई शाम ।
कौन दुहै मोरी गइया
हो गई शाम ।
नहीं आए रे कन्हैया ।

[अकेली मांजी खड़ी हैं । संगीत जैसे उनके हृदय से फूट रहा है । गोपी आती है । मां को देखती रह जाती है ।]

गोपी : मांजी, ऐसे काहे खड़ी हैं ? का देख रही हैं ?

मां : अभी कोई नहीं आया रे ! न बेटा, न बहू, न आशा, न शोनू । सुबह-सुबह सब चले जाते हैं घर छोड़कर । देखो सन्ध्या हो गई । पशु-पक्षी भी इस समय अपने घर लौट आते हैं ।

[आहट होती है ।]

गोपी : आशा बिटिया !

[भारी-सा बस्ता पीठ पर लादे आना ।]

मां : हे भगवान, देखो तो सही, पढ़ाई के नाम पर कमर टेढ़ी किए दे रहे हैं । पढ़ाई का बस्ता है या कुली का बोझ ?

आशा : हेलो दादी !

[मां आशा को अपने अंक में भर लेती हैं ।]

आशा : दादीजी, मेरी टीचर ने एक दिन कहा कि प्रतिभा माने कल्पना । फिर कहा, प्रतिभा माने कल्पना नहीं, प्रतिभा माने चतुराई । फिर बताया, प्रतिभा माने हिम्मत । बताइये दादीजी, टीचर रोज अपनी बात बदल देती हैं, तो फिर हम क्या जानें किसी शब्द का सही अर्थ क्या है ?

मां : पहले जाओ, कपड़े बदलो । हाथ-मुंह धो लो । फल खाकर दूध पिओ । फिर मैं तुमसे बात करूंगी ।

[गोपी के साथ आशा अन्दर चली जाती है । मां आशा का बस्ता खोलकर देखने लगती हैं ।]

मां : इतनी-इतनी किताबें, इतनी-इतनी कापियां, बाप रे बाप ! अरे ये क्या है ? फिल्मी पत्रिका । (देखती हैं ।) और ये क्या है ?

[लम्बा बिजली का तार देख ।]

मां : नाथू !

[नाथू का आना ।]

मां : ये क्या चीज है ? जरा पकड़ो तो सही । बाप रे !

तानो तो, ई है क्या चीज ?

नाथू : ई म्युजिक तार है । वो जो पड़ोस में सेठी साहब हैं न, उनकी लड़की टेपरिकार्डर से इसे जोड़ देती है, गाना यहां पहुंच जाता है ।

[गा पड़ना ।]

मां : इस खाली घर में बाहर से पता नहीं क्या-क्या आ रहा है। यह तार टेलीफोन का। यह टेलीविजन, ई वीडियो, ई कैसेट । ई सब जंजाल से अब कोई जगह खाली नहीं रह सकती ।

[स्कूल यूनिफार्म में शोनू का आना । उसके एक हाथ में क्रिकेट खेलने का बैट है । प्रवेश करते ही यह अपना एक-एक सामान निकालकर नाथू की ओर फेंकने लगता है ।]

शोनू : ले जाओ । कपड़े तैयार करो । मुझे एक फ्रेंड के बर्थ-डे पार्टी में जाना है ।

[नाथू सामान बटोरकर भीतर जाता है ।]

मां : शोनू बेटे, मुझको नहीं देखा ?

शोनू : हेलो दादीजी !

[कुछ गाता हुआ कराटे की मुद्राएं दिखाने लगता है । कराटे का अभ्यास दादी पर करने की कोशिश करता है। दादी उसे डांटती हैं। पर उसका उत्साह और भी बढ़ जाता है। सहमी हुई दादी को देखकर शोनू हंस पड़ता है और हवा में कराटे नाच करने लगता है ।]

मां : ये क्या तमाशा है ? तुम आदमी हो कि जानवर ? यही तेरे स्कूल में पढ़ाया जाता है ?

[नाथू का आना ।]

नाथू : भैया, आपके कपड़े तैयार हैं ।

मां : अब कहीं नहीं जाना । सारा दिन बाहर रहकर यही सब ऊटपटांग सीखता है । कहते हो, अमेरिका जाकर इंजीनियरिंग पढ़ूंगा ।

शोनू : मैं नहीं कहता, ममी कहती है । और जहां तक बाहर रहने की बात है, दादीजी, 'लाइफ' बाहर ही है ।

मां : बाहर कहां है बेटे ?

शोनू : घर में 'लाइफ' नहीं है ।

मां : क्यों नहीं है ?

शोनू : ममी-डैडी से पूछो ।

[शोनू का अन्दर चला जाना ।]

मां : भाई नाथूराम, सुबह धोबी के बच्चे आये थे न । यहां कैसे खेल रहे थे ! सारा घर खुशी से भर गया था ।

नाथू : सारा सामान इधर से उधर कर दिया था ।

[नाथू कमरे के सामान को एक नजर देखकर चीजों को करीने से सही जगह रखता हुआ ।]

नाथू : आते ही मेम साहब जरूर टोकेंगी कि यहां कौन आया था ? उन्हें एक-एक चीज का पता रहता है । मजाल है कि कोई चीज अपनी जगह से जरा भी हिल जाए ।

[भीतर से कपड़े बदलकर आशा का निकलना और दूसरी तरफ से शोनू का जाना ।]

शोनू : ओ० के०, जरा देर से आऊंगा । आज डिनर बाहर ।

मां : यह घर है या होटल ?

शोनू : दादीजी, चलिए आपको भी घुमा लाऊं।

मां : अरे याद है, एक बार ले तो गया था घुमाने। यहां से वहां, वहां से यहां, इधर से उधर, उधर से इधर। बेमतलब जैसे पशु घूमते रहते हैं।

शोनू : यही तो घूमना है। हमारी जिन्दगी भी तो बेमतलब है, डियर दादीजी।

मां : ये बेसिर-पैर की ऊल-जलूल बातें तेरी खोपड़ी में कहां से आती हैं? क्यों रे, तेरी जिन्दगी का कोई मतलब नहीं? कहां सुना? किसने कहा?

शोनू : जहां सुनो, लोग यही कहते हैं।

मां : बाहर यही सुनाई पड़ेगा बेटे! घर में रहा करो। कोई शौक पैदा कर अपने भीतर, जो तेरा हो।

शोनू : अच्छा, कल से करूंगा दादीजी।

मां : आज क्या हो गया?

शोनू : आज तो बीत गया।

मां : तो कल आ गया न? चल, ठाकुरजी की पूजा-आरती करते हैं।

शोनू : पूजा-पाठ बूढ़ों का काम है।

मां : क्या कहा?

शोनू : 'यू डोन्ट नो आवर प्राब्लम। वी हैव टू फेस माडर्न टाइम्स एण्ड इट्स प्रेशर।'

मां : वाह रे तेरी अंगरेजी! क्या है तेरा प्राब्लम?

शोनू : जनरेशन गैप'''बाइ'''।

[भागना।]

मां : कहां जाएगा भागकर?

शोनू : डैडी-ममी से पूछो।

आशा : यू शटअप!

शोनू : यू आल शटअप!

[मां रोक लेती हैं।]

शोनू : दादी, रियली, मुझे देर हो रही है।

[शोनू बाहर भागना चाहता है।]

मां : नहीं, तुम इस तरह नहीं भाग सकते। आशू, तुम उधर से। जाने न पाये।

[दौड़ना-पकड़ना, शोनू का निकलकर बाहर जाना।]

आशा : शोनू झूठ बोलता है। उसके किसी दोस्त का आज जन्मदिन नहीं है।

मां : बेटी, तुम्हारे बस्ते में यह फिल्मी पत्रिका कहां से आ गई?

आशा : फिल्मी पत्रिका तो सभी लोग पढ़ते हैं।

मां : जो सभी लोग करते हैं, क्या वही ठीक होता है? सुनो, तुमने स्कूल से आते ही मुझसे अपनी टीचर की शिकायत की थी कि टीचर रोज अपनी बात बदल देती है। शब्द का सही अर्थ क्या है, वह नहीं बताती। सच्चाई जानना चाहती हो? तुम्हारी टीचर यही फिल्मी पत्रिका पढ़कर और फिल्म देखकर टीचर बनी हैं, तभी उन्हें रोज अपनी बात बदलनी पड़ती है।

आशा : तो टेलीविजन में फिल्में क्यों दिखाई जाती हैं?

मां : इसलिए कि सबको अपनी बात बदलने की आदत पड़ जाए।

[बाहर से नीलम का आना।]

आशा : ममी!

नीलम : यहां खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो? जाकर पढ़ाई करो।

मां : अभी तो स्कूल से आई है। जा, थोड़ा खेल-कूद ले।

नीलम : कोई जरूरत नहीं। चलो, पहले स्कूल का काम करो।

मां : स्कूल का काम यह है···फिल्मी पत्रिका।

[नीलम का पत्रिका ले लेना। उसे देखने लगना। सहेली को फोन करना। मां और आशा का अन्दर जाना।]

नीलम : (कमरे की चीजों को देखकर) ये सब किसने उलट-पुलट किया है? (पुकारना) नाथू! गोपी!

[दोनों का दौड़े आना।]

नीलम : यह क्या है? बुद्ध की मूर्ति टेढ़ी क्यों हो गई? शिव-पार्वती, गणेश की मूर्तियां, यह घोड़ा, यह कुत्ता, ये अपनी-अपनी जगह से क्यों हटे?

नाथू : मेम साहब, धोबी के बच्चे आए थे।

नीलम : धोबी के बच्चे! मांजी न कहा होगा, आवो, आवो न, बैठो···बैठो···सोफे पर बैठो। खेलो, खेलो, गोपी, इन्हें कुछ खिलाओ।

[मां आकर हंस रही थीं।]

मां : कितना अच्छा अभिनय करती हो।

नीलम : हमें करना पड़ता है। हमें पास्ट में नहीं, प्रजेन्ट में रहना है।

मां : क्या है तुम्हारा प्रजेन्ट?

नीलम : 'एम्बीशन'। अपने 'डिजायर्स' को पूरा करना।

मां : वह असम्भव है।

नीलम : मुझे उपदेश नहीं, 'इक्सपीरियन्स' चाहिए।

मां : अब तक कोई 'इक्सपीरियन्स' किया?

नीलम : 'ह्वाई नाट।'

मां : बहुत अच्छी बात है—'रिलेक्स'।

नीलम : अभी और जो चाहती हूं, उसे पाकर रहूंगी।

मां : हानि-लाभ, जीवन-मरन, जश-अपजश विधि हाथ···

नीलम : धोबी के बच्चे। सारा गन्दा कर दिया।

मां : बहूरानी, बुरा नहीं मानना। ड्राइंगरूम की ये मूर्तियां, ये चीजें किसलिए हैं?

नीलम : सजावट के लिए। जो यहां आए, उस पर प्रभाव पड़ सके।

मां : तो महात्मा बुद्ध, शिव, दुर्गा, गणेश सजावट के लिए हैं। इन देवी-देवताओं के साथ कुत्ते, घोड़े···?

[गोपी का गायन।]

कुंदन बन क्यों छोड़ा रे माधव
कुंदन बन।
कुंदन बन क्यों छोड़ा रे माधव
कुंदन बन
कुंदन बन॥
कुंदन बन क्यों छोड़ा?
कुंदन बन।
माधव क्यों छोड़ा?

[बाहर कार आकर रुकने की आवाज। मां का भीतर जाना। भीतर से नीलम का आना।]

नीलम : नाथू, दौड़ो। साहब आ गए।

[प्रकाशचन्द्र का प्रवेश। पीछे-पीछे नाथू का ब्रीफकेस और फाइल का गट्ठर लिए आना। बेतरह थके, प्रकाशचन्द्र का बैठ जाना।]

नीलम : देखो नाथू, साहब का बाथरूम ठीक करो, गीजर चला दो। फिर नाश्ता लगाओ। (रुककर) अब नाश्ता क्या करेंगे। एक कप ठंडा दूध।

प्रकाश : नहीं, गर्म कॉफी।

नीलम : पी०सी० डार्लिंग, गर्म कॉफी तुम्हें नुकसान करेगी। चीज पकौड़े ले आई हूं तुम्हारे लिए। तुम्हारे 'बास' मिल गए, सेठी साहब ! मेरी इस साड़ी की तारीफ करने लगे। मैंने कहा—चलिए, शीराज में कॉफी पीते हैं। सेठी साहब को चीज पकौड़े बहुत पसन्द हैं।

प्रकाश : ओ, आई सी।

नीलम : कल चार बजे चाय पर बुला लिया है।

प्रकाश : कल मुझे दफ्तर जाना है।

नीलम : कल छुट्टी है।

प्रकाश : सेठी साहब का ही काम है।

नीलम : डियर, तीन बजे तक काम पूरा कर डालना।

[प्रकाश का अन्दर जाना।]

नीलम : नाथू ! नाथू !!

[नाथू का आना।]

नीलम : शोनू कहां है ?

नाथू : दोस्त-पारटी में गए हैं।

नीलम : किससे पूछकर ?

नाथू : मांजी ने मना किया, माने नहीं।

[उसी समय मांजी आशा के साथ ठाकुरजी की पूजा करती दिखती हैं।]

दूसरा दृश्य

[नाथू-गोपी मुद्राओं से कुछ बात कर रहे थे। शोनू-आशा चुपचाप उन्हें छिपकर देख रहे थे। आशा का हंस पड़ना।]

शोनू : क्या कर रहे थे ऐसे-ऐसे ?

[नाथू-गोपी लजाकर भागते हैं—शोनू-आशा उन्हें घेर लेते हैं।]

नाथू : अरे, हम बात कर रहे थे।

शोनू : बिना बोले बात ?

आशा : ऐसे ?

नाथू : हम नट-नटी हैं न ! हम ऐसे बिना बोले बात करते हैं।

शोनू : नट-नटी क्या है ?

गोपी : हम हैं।

शोनू : क्या हैं ?

नाथू : नट माने···नटराज शंकर भगवान। नटी माने माता पार्वती।

[मांजी का आना।]

शोनू : ये कहता है, नट माने शंकर। ईडियट···।

आशा : नटराज।

मां : सही कहता है।

शोनू : और नटी माने पार्वती ।

मां : बिल्कुल सही, पार्वती यानी श्रद्धा, शंकर यानी विश्वास। बिना श्रद्धा के विश्वास नहीं—याम्यां बिना न पश्यंती ।

शोनू : क्यों रे, इतना चक्कर है !

[खेल करना ।]

नाथू : मांजी, कमिश्नर साहब के घर से पुछवाया है, आज अपनी कौन तिथि है ?

मां : विक्रम भाद्रपद शुक्ल पक्ष अष्टमी ।

शोनू : अरे सीधे क्यों नहीं कह देतीं—शनिवार, इक्कीस सितम्बर ।

मां : उन्होंने अपनी तिथि पुछवाई है ।

आशा : सितम्बर अंग्रेजी महीना है । यह हमारा नहीं है। हमारा है विक्रम भाद्रपद शुक्ल अष्टमी ।

[नाथू का तिथि याद करते हुए जाना, नीलम की पुकार, गोपी का भीतर भागना ।]

शोनू : जो हमारा नहीं है, वह हमारा कैसे हो गया ? हमारा कहां गया ?

मां : यही तो जानने की बात है बेटे, वह हमारा कहां गया ? तुम उसे जान न सको, इसलिए तो तुमको फंसा दिया गया है—पाप म्यूजिक, मारकाट की फिल्में, अंग्रेजी भाषा, टी० वी०, वीडियो, जूडो-कराटे, खो-खो खोला, पो-पो पोला ।

[सबका हंस पड़ना । भीतर से गोपी को संग लिए हुए नीलम का आना । नीलम उसे कुछ समझा रही है ।]

शोनू : हमें पढ़ाया जाता है, इस ब्रह्मांड के केन्द्र में शून्य है ।

मां : इसीलिए पढ़ाया जाता है, तुम भी शून्य हो जाओ ।

नीलम : बच्चों का दिमाग चौपट कर रही हैं ? चलो तुम लोग यहां से ।

शोनू : कहां जाएं ? बाहर जाएं तो कहती हो, घूमता है। घर में रहें तो क्या मुंह सिल लें सुई-धागे से ?

नीलम : शोनू !

शोनू : तुम्हारे पास कभी वक्त नहीं कि तुमसे बात कर सकें। पापा को भी अपने दफ्तर से कभी फुर्सत नहीं । तो क्या हम दादी से भी बात ना करें ? दादी से इतना घबड़ाती क्यों हो ? ह्वाई ? दादी इज़ पास्ट। पास्ट से डर लगता है । तभी उससे हमें काट देना चाहती हो, ताकि हम और गुलाम होते रहें ।

नीलम : जाओ, अपना काम करो ।

शोनू : बताइए न, क्या है मेरा काम ?

नीलम : तुम्हें इंजीनियर बनना है । 'न्यूक्लियर फिजिक्स' पढ़ने अमेरिका जाना है ।

शोनू : क्यों ?

नीलम : शोनू !

शोनू : शोनू क्या है ? मैं कौन हूं ? वे गांव के लोग कौन थे ? यहां क्यों आए थे ? मामला क्या है ? सब लोग हमसे छिपाकर···ताकि हमें कुछ भी पता न रहे । क्यों ?

नीलम : मांजी, यह क्या किया आपने ? मेरे बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। हम कहीं के न रह पाएंगे। हमारी

सारी योजना मिट्टी में मिल जाएगी। चलो यहां से···चलो।

[शोनू को खींचकर ले जाने का प्रयत्न, मां का सामने खड़ा हो जाना।]

मां : क्या करती हो ? छोड़ो, बच्चा नहीं, सोलह साल का है। मुझसे पूछो जो मैंने किया।

नीलम : मैं कौन हूं, ये खतरनाक प्रश्न इसे कहां ले जाएगा ?

मां : यह प्रश्न तुमसे किया है, अपनी मां से। तुम्हें उत्तर देना चाहिए, मैं कौन हूं ?

नीलम : ये प्रश्न इसे मिला कहां से ?

मां : बाहर से न जाने कितनी चीजें इस घर में आती हैं। कौन-सी चीज कैसी है, माता-पिता को चिन्ता होनी चाहिए। तुम्हें कोई चिन्ता है ? चिन्ता है तो केवल भविष्य की। आज की नहीं, कल की। बेटा प्रश्न करता है, यह तो बड़े सौभाग्य की बात है।

नीलम : शोनू, ये ले रुपये, जा बाहर घूम आ।

शोनू : बाहर ? बाहर कहां ?

नीलम : अच्छा, भीतर जा। मेरा दिमाग मत चाट।

शोनू : भीतर ? भीतर कहां ?

नीलम : यू गेट आउट आफ मी।

शोनू : ओ, आई सी।

नीलम : खबरदार, फिर कभी अपने डैडी की भाषा बोली। जाओ, टी० वी० देखो। मैग्जीन पढ़ो। वीडियो चला लो। आउट।

[आशा-शोनू का जाना।]

नीलम : देखिए मांजी, आपने अपनी तरह से पी० सी० को

पाला।

मां : पी० सी० नहीं, श्री प्रकाशचन्द्र कहो। नाम ही लेना है तो मेरे बेटे का पूरा नाम लो।

नीलम : खैर, अपने बेटे को अपनी तरह से पाला। मुझे अपने बच्चों को अपनी तरह से पालने दीजिए।

मां : क्या है तुम्हारा अपनापन ? क्या है तुम्हारा अपना ? बताओ न, मैं धन्य हो जाऊंगी जानकर।

नीलम : मेरा अपना कुछ नहीं है ?

मां : देखो, यह बंगला सरकार का है। ये फर्नीचर, ये सामान, ये चीजें दूसरों को दिखाने और प्रभावित करने के लिए हैं। तुम्हारे बच्चे ? एक अमेरिका का, एक इंग्लैण्ड की, एक इंजीनियर, एक डाक्टर। तुम्हारा अपना क्या है ?

नीलम : आपसे बात करना मुश्किल है।

मां : तो क्या मैं चुप हो जाऊंगी ? नहीं, मैं टोकती रहूंगी। जो गलत है, उसे गलत कहती रहूंगी।

[दफ्तर जाने के लिए तैयार प्रकाशचन्द्र का आना।]

प्रकाश : क्या है ?

नीलम : अपनी माताजी से पूछो।

प्रकाश : मां से क्या पूछूं ?

मां : हां, इसे तो सब पता है। अब क्या पूछना ?

प्रकाश : जितना जान गए हैं मां, वही जरूरत से ज्यादा है।

मां : दिन-रात दफ्तर-दफ्तर। फाइल-फाइल। कभी बहू के साथ भी रहता है ?

प्रकाश : बहू को पता है, मैं इसका आदमी नहीं, सरकार

का आदमी हूं।

मां : बड़ा मजाक करने आया। हंसी तो कभी चेहरे पर देखी नहीं। छुट्टी के दिन भी दफ्तर।

प्रकाश : अच्छा मां, चलूं।

[मां के चरण स्पर्श करके जाना।]

नीलम : ठीक तीन बजे तक आ जाना है।

[फूलमाला, जो मांजी इस बीच बना रही थीं, उसे समेटकर अन्दर जाने की तैयारी।]

नीलम : आज चार बजे इनके बास सेठी साहब हमारे यहां चाय पर आ रहे हैं।

मां : सेठी साहब चाय के बहाने मुझसे बातें करने आ रहे होंगे।

नीलम : लेकिन इस बहाने हमें उनसे एक जरूरी बात करनी है। ऐसा है मांजी, इनकी तरक्की और ट्रांसफर दोनों होने को हैं। एक बहुत अच्छी पोस्टिंग दिल्ली में है और सेठी साहब के ही हाथ में है।

मां : तो मैं क्या करूं?

नीलम : (दिखाती हुई) यहां सेठी साहब बैठेंगे। यहां आप बैठेंगी। यहां मैं। यहां वो।

मां : मैं क्या करूंगी यहां बैठकर?

नीलम : आपसे ही बात करने के बहाने सेठी साहब को यहां बुलाया है। ऐसा है, आप उनसे बात कीजिएगा। आगे मैं संभाल लूंगी।

मां : ऐसे आदमी से क्या बात करूंगी! राम-राम, कोई ऐसे करता है! मेरा बेटा भी किसके साथ पड़ गया। गांव वालों का वह सरकारी रुपया कहां गया?

नीलम : खबरदार! उनसे ये बातें मत कीजिएगा। जैसे

ही चाय खत्म हो जाएगी, आप धीरे से उठकर चली जाइएगा। बस, आगे हम अपना काम कर लेंगे। (रुककर) मांजी, हम लखनऊ से दिल्ली पहुंच जायेंगे तो हमारे सारे सपने पूरे हो जाएंगे। दिल्ली से ही सब कुछ होता है। दिल्ली में दोनों बच्चों के 'एडमिशन' के लिए कार्रवाई कर दी है। नई कार की बुकिंग करा दी है। डी० डी० ए० से एक जमीन के लिए कोशिश कर रही हूं। इसीलिए तो मुझे हर महीने दिल्ली जाना पड़ता है।

[नीलम का जाना। पुष्पहार लिए मां का मौन खड़ी रह जाना। गोपी का गायन।]

हे मन धीरे चलो मैं हारी।
हाथ गठरिया सिर पै गगरिया
पैरों में पायल भारी, हे मन।
उज्ज्वल रूप दिया बगुले को
कोयल कर दी कारी,
नार चतुर तो बांझ कर डारी,
राजा हो गए भिखारी, हे मन।

द्वितीय अंक

[चाय की दावत की पूरी तैयारी। नाथू बेयरा के वस्त्रों में। सब सजा-बजा है। हल्का संगीत बज रहा है।]

नीलम : आशा बेटी, तुम यहां नहीं आवोगी। इधर-उधर नहीं घूमोगी। यहां खड़ी रहोगी। अगर सेठी साहब ने बच्चों के बारे में पूछा तो दौड़ी हुई आवोगी। अगर उन्होंने कुछ सुनाने को कहा तो कहीं अंग्रेजी गाना सुनाओगी। वे कहें तब भी रामायण भजन नहीं गाओगी।

प्रकाश : क्यों ? इसमें क्या बुराई है ?

नीलम : डियर, तुम समझते नहीं। रामायण, भजन, ये सब पिछड़ापन है। धर्म-अध्यात्म में कुछ नहीं रखा।

प्रकाश : सेठी साहब को तो धर्म और अध्यात्म में बड़ी गहरी रुचि है। बड़े-बड़े महात्माओं के प्रवचन सुनने जाते हैं।

नीलम : जी हां, सिर्फ अंग्रेजी में प्रवचन देने वाले महात्मा।

नाथू : सब तैयार है। रेडी सर !

प्रकाश : शाबाश भाई नाथूराम !

नीलम : देखो डियर, सेठी साहब के सामने नाथू को भाई नाथूराम मत कहना। नाथू हमारा नौकर है। नाथू यानी नाथू।

प्रकाश : नाथू कौन है, जानती हो ?

नीलम : देखो, तुम्हारा 'बैक ग्राउन्ड' ग्रामीण है—गांव का। गांव यानी देहातीपन, अवैज्ञानिक, अंधविश्वासी।

प्रकाश : तुममें कितना अंधविश्वास है, कभी देखा है ?

नीलम : मुझे इतनी फुर्सत नहीं।

प्रकाश : हर वक्त तनाव में क्यों रहती हो ?

नीलम : इसकी वजह तुम हो।

प्रकाश : मैं ?

नीलम : यहां रहकर मैं ब्लड प्रेशर की मरीज हो गई। मेरा काम मेरी मजबूरी है। मैं जलती हूं—तभी यहां रोशनी है। ठाकुरजी के हरि कीर्तन से कुछ नहीं होता। पैसा है तो ठाकुरजी भी हैं।

प्रकाश : देखो, अभी सेठी आने वाले हैं।

नीलम : तुम्हारे लिए मैं कितना करती हूं, सहती हूं, पता भी है ?

प्रकाश : शोनू कहां है ?

नीलम : पिक्चर।

[खामोशी।]

नीलम : ओ, चार बज गए। सेठी साहब पहुंच रहे होंगे। प्रकाश, रिसीव करो बाहर। मैं उन्हें भीतर रिसीव करूंगी।

[प्रकाश का बाहर खड़ा होना। नीलम का मां को पुकारना। मां का आना।]

नीलम : मांजी, आपने साड़ी नहीं बदली ?

मां : मेरे लिए यही ठीक है।

नीलम : खद्दर की मामूली साड़ी ! मैंने आपको खादी सिल्क की साड़ी दी थी। जाकर बदल लीजिए।

मां : इसी तरह ठीक हूं।

नीलम : हाथ जोड़ती हूं।

मां : क्यों हाथ जोड़ती हो ? क्यों इस तरह डरी हुई हो ? आखिर वह भी तो आदमी है। उसे चाय पर बुलाया है कि ··? (सहसा देखना) अरे ! मेरे भगवान की मूर्ति यहां कौन ले आया ?

नीलम : भगवान तो सर्वत्र हैं मांजी। देखिए, यहां कितने अच्छे लग रहे हैं ठाकुरजी।

मां : मेरे भगवान सजावट की चीज नहीं। सावधान बहू ! अगर ऐसी गलती फिर हुई तो मैं अपने प्रभु के लिए प्राण दे दूंगी।

[मां का नाथू-गोपी के साथ मन्त्रपाठ करती हुई मूर्ति को लेकर भीतर जाना।]

आवाहनमजानामि ना जानामि विसर्जनम्।
पूजा चैवनाजानामि, त्वंगतिः परमेश्वरम्॥

[बाहर से प्रकाश के साथ सेठी साहब का आना। मांजी को प्रणाम करना।]

मां : सुख पाओ।

सेठी : मांजी, आप क्या आशीर्वाद देती हैं—सुख पाओ। अरे आशीर्वाद दीजिए, सुखी रहो।

मां : सुख कहीं है नहीं, सुख तो पाना होता है।

सेठी : कैसे ?

नीलम : आइए बैठिए । यहां बैठकर आराम से बातें कीजिए।

सेठी : धन्यवाद। हां तो मांजी, सुख कहां है ?

मां : अपने भीतर आपको ही ढूंढ़ना होगा।

सेठी : ढूंढ़ना तो बाहर होता है।

मां : बाहर केवल चीजें हैं, सामान हैं, अभाव है। बाहर कोई सुख नहीं है। नहीं समझे ? ऐसा है सेठी साहब, सुख का स्रोत अगर बाहर है—दूसरों का दिया हुआ तो यह सुख हो ही नहीं सकता। सुख तो अपना ही है। अपना कमाया हुआ। अपने से आप पाया हुआ।

सेठी : ये तो साधना की बातें हैं।

मां : दुखी रहना स्वाभाविक है। सुखी होना प्रयत्न है।

सेठी : प्रयत्न करने से सुख मिल सकता है ?

मां : हां, बिल्कुल।

सेठी : प्रयत्न माने ?

मां : किसी का हो जाना। कोई तुम्हारा हो जाय···तुम किसी के हो जाओ।

सेठी : मांजी तो कविता करने लगीं।

[हंस पड़ना। नीलम से बात।]

सेठी : जो भी हो, मांजी हैं बड़ी दिलचस्प।

प्रकाश : सर, आइए। तशरीफ रखिए।

सेठी : मांजी, आपके भगवान ठाकुरजी के क्या हाल-चाल हैं ?

मां : जो है उसका हाल-चाल नहीं होता। वह तो है ही। अच्छा चलूंगी, नमस्कार।

सेठी : अरे, आप बैठिए न। आपसे ही बात करने आया हूं।

नीलम : मांजी का दवा लेने का समय हो गया।

[मां का जाना।]

नीलम : सच, सुख अपने में है। देखिए न यहां अपना क्या

है ? न अपना घर है, न अपनी नौकरी है, न अपनी परम्पराएं हैं।

प्रकाश : न अपनी शिक्षा, न अपनी भाषा।

सेठी : तो सुख कहां से प्राप्त हो ?

नीलम : ये लीजिए 'चीज' पकौड़े।

[सेठी का उठकर घूमने लगना।]

प्रकाश : और चाय लेंगे सर ?

सेठी : प्रकाश, तुम्हारी मां का तुम पर कितना असर है ? मैं तो पाता हूं, तुम पर कोई प्रभाव नहीं है। श्रीमती नीलम का ही प्रभाव है।

नीलम : थैंक्यू सर !

सेठी : अरे आप हैं ही ऐसी।

[पति-पत्नी की चापलूसी-भरी हंसी।]

प्रकाश : सर, मिसेज सेठी की तबीयत अब कैसी है ?

सेठी : वैसी ही—हाई ब्लड प्रेशर, मोटापा, चक्कर आना। पूछो नहीं, पड़ी रहती हैं। गुस्से और शक की आग में जलती रहती हैं। मेरा भी ख्याल है, भगवान में विश्वास जरूरी है। मेडिकल साइंस बताती है, इसके बड़े फायदे हैं।

नीलम : इनके लिए सारे व्रत रखती हूं। आपकी कृपा से दिल्ली की नौकरी मिलते ही हम वैष्णोदेवी के दर्शन करने जाएंगे। नाथू, जाओ यहां से।

[नाथू का जाना।]

सेठी : आपकी फाइल ऊपर भेज दी है।

[तीनों में गुप्त वार्ता। उसी समय मां दिखती हैं। फूलों के हार से ठाकुरजी की मूर्ति सजा रही हैं। आशा, गोपी और नाथू प्रसन्न हैं।]

दूसरा दृश्य

शोनू : शाम को मैं घर पर नहीं रह सकता।

आशा : तो मैं भी नहीं रह सकती।

शोनू : तो जाओ न। डरती क्यों हो ?

आशा : चीखते क्यों हो ?

शोनू : तुम्हारी 'हिपोक्रेसी' पर।

आशा : दादीजी से पूछकर जाओ।

शोनू : तुम पूछो—यू आर 'शी', आई एम 'ही।'

आशा : शटअप !

शोनू : बाई।

[मांजी का आना।]

मां : कहां चले ?

शोनू : आई एम एडल्ट।

[नीलम का आना।]

नीलम : ये क्या है ?

शोनू : दादी इज ग्रेट—कहती हैं, बाहर वही घूमता है जो अपने-आप से उखड़ा है।

आशा : लड़ा रहा है ममी !

नीलम : इसके दिमाग में हरदम लड़ाई ही लड़ाई रहती है।

शोनू : लड़ाई जिन्दगी है।

मां : शोनू इज राइट ।

शोनू : लेट अस फाइट ।

[अभिनय ।]

नीलम : ये क्या बत्तमीजी है ?

शोनू : चिल्लाओ नहीं ।

[नीलम का देखती रह जाना ।]

शोनू : मेरे चारों ओर सब कुछ झूठ है ।

मां : शोनू !

नीलम : मांजी, आप क्यों बच्चों का दिमाग खराब कर रही हैं ?

शोनू : दादीजी बिल्कुल सही कहती हैं—हम कहीं 'बिलांग' नहीं करते, तभी हमें किसी से प्रेम नहीं है। न किसी चीज से, न किसी काम से ।

नीलम : जो पत्थर की पूजा करता है, उसे बड़ा प्रेम है ?

शोनू : हां, दादीजी का सबसे प्रेम है ।

आशा : दादी न होतीं तो हम किसके पास रहते ?

मां : तुम भी बातें करो । तुम भी तो बच्ची हो। तुम्हारी बातें मुझे बुरी नहीं लगतीं ।

नीलम : मैं बच्ची हूं आपकी नजरों में ?

मां : देखो न, पत्थर के खिलौने सजा रखे हैं। जो जीवन जी नहीं पाए, ये वही तुम्हारे भीतर के पत्थर हैं । एक ओर महात्मा बुद्ध, दूसरी ओर कुत्ते की मूर्ति । कहीं कोई तुक है ?

नीलम : क्या ?

मां : पाप को पूजा से जोड़ दिया ।

[नाथू का गायन ।]

पाप को पूजा से जोड़ दिया ।
बाहर के लोभ में घर को छोड़ दिया ।
ऐसे चले, ऐसे चले ।
अपने से ही नाता तोड़ दिया ।
पाप को पूजा से जोड़ दिया ।
कमल को जड़ से ही तोड़ दिया ।
पाप को पूजा से जोड़ दिया ।

[गोपी आकर साथ देती है, फिर छेड़ती है ।]

नाथू : देख, मुझे छेड़ नहीं । आए थे काम को, हो गए बेकाम ।

गोपी : सलाम ।

[अभिनय ।]

नाथू : देखो, जो हम हैं, वही हैं—दूसरे की नकल बेकार ।

गोपी : जी सरकार ! अरे हम माडरन हैं, मेम साहब की तरह । तुम्हारे साहब तो देहाती हैं ।

नाथू : चुप, साहब गऊ हैं गऊ ।

गोपी : गऊ हैं तो सरकारी ग्रांटवाला अपन को काम कियूं नहीं करा लेता ? मरद होकर डरे ? कियूं ? ह्वाई ?

नाथू : मांजी ने साहेब से कई बार मेरे सामने कहा है। मांजी करा देंगी काम ।

गोपी : काम मांगे दाम
दाम नहीं दम
दम नहीं गम
गम नहीं गो
गो गो गो

[कैबरे डांस की नकल। नाथू घबड़ाकर]

नाथू : अरे, तू पागल होइ गई का ? बोल, ई कहां देखा ?

गोपी : टेलीविजन फिल्म में।

नाथू : सत्यानाश !

गोपी : यू शटअप माई डार्लिंग।

नाथू : मांजी ! मांजी ! मांजी !

गोपी : अरे चुप। मेम साहब को तेज सिरदर्द होइ रहा है। मांजी सिर दबाई रही हैं। (सहसा) कोई आया है। साहब दौड़े से आइ गए।

[जाना। साहब का सामान लेकर प्रकाशचन्द्र के पीछे-पीछे आना। सीधे अन्दर चले जाना।]

गोपी : अब मजा आएगा। साहब दफ्तर जाना चाहेंगे, मांजी उन्हें जाने न देंगी।

[नाथू का आना।]

नाथू : जा, लंच तैयार कर। साहब दफ्तर जाएंगे। मांजी ने ऐसा सिर दबाया कि मेम साहब सो गईं।

[प्रकाश के साथ मां का आना। नाथू-गोपी का जाना।]

मां : पूरे नौ दिन के बाद देहरादून से आए हो। आते ही दफ्तर भागने की तैयारी। पत्नी की तबीयत खराब है। जाकर उसके पास बैठो। तुम्हारे लिए इतनी चिन्ता करती है, तुम्हें भी बहू का कोई ध्यान है ?

प्रकाश : कुछ चक्कर ही ऐसा था। सेठी साहब की सम्पत्ति का मामला था।

मां : अरे, अपने गांव वालों की भी कोई चिन्ता है ? नाथू-गोपी रोज पूछते रहते हैं कि ग्रांट का क्या हुआ ?

कब काम होगा ?

प्रकाश : नाथू, गाड़ी ठीक करो, दफ्तर जाना है।

मां : बहू को छोड़कर दफ्तर जाओगे ?

प्रकाश : जल्दी आ जाऊंगा। तुम तो हो मां।

मां : मेरे भरोसे पत्नी को छोड़ना, नौकरों के भरोसे मां को छोड़ना, नौकरी के लिए खुद को छोड़ना, ये कौन-सा जीवन है ?

प्रकाश : मां, तुम्हें कोई तकलीफ है ?

मां : मेरा घर है। मेरा बेटा है, बहू है, पोता-पोती हैं, और सबके आधार मेरे ठाकुरजी हैं। मुझे कैसी तकलीफ ? तकलीफ तुम्हें है, बहू और बच्चों को है।

प्रकाश : क्या ?

मां : तुम सबमें कोई भीतरी लगाव नहीं है। सब बाहर-बाहर, हरदम बाहर। किसी तो चाय, लंच, डिनर पर बुलाते हैं, तो उसका आनन्द लो। हर काम का आनन्द लेना, यही ईश्वर है। (रुककर) फैजाबाद, फिर इलाहाबाद, फिर लखनऊ और अब दिल्ली। यह कैसी यात्रा है ? कभी रुककर देखा ?

प्रकाश : मां, तुम्हारी सोच बिल्कुल सही है। पर सबकी जिन्दगी अलग-अलग है।

मां : किसने किया अलग-अलग ?

प्रकाश : इसका जवाब सरकारी अफसर नहीं दे सकता। जिन्हें जवाब देना चाहिए, वे सब चुप हैं। नाथू, सामान रखो।

नाथू : रख दिया हुजूर !

प्रकाश : मां, क्षमा करना।

[मां के चरण स्पर्श कर चले जाना। मां का चुप खड़ी रह जाना। बाहर से शोनू और आशा का आना।]

शोनू : हलो माई डियर दादी !

मां : हलो मेरे प्यारे···प्राण दुलारे ! ममी की तबीयत खराब है, सो रही हैं।

[धीरे गाते हुए।]

चलो कपड़े बदलो।
हाथ-मुंह धोवो।
फिर खाना खाओ।

शोनू : फिर घूमने जाओ।
ममी की सेवा करो।
होमवर्क पूरा करो।

[प्रसन्न हंसी।]

शोनू : दादीजी, संवाद माने ?

मां : संवाद माने डायलाग।

शोनू : ममी-डैडी में डायलाग क्यों नहीं होता ?

मां : ममी-डैडी की आलोचना करता रहता है—अभी खबर लेती हूं।

[दादी का शोनू को दौड़ाना।]

शोनू : (दौड़ते बचते हुए) देखिए, देख लीजिए, छोटे और बड़े के बीच संवाद नहीं हो सकता।

[ममी का आना।]

नीलम : ये क्या ऊधम मचा रखा है ?

[सब चुप।]

मां : अब कैसी तबीयत है ?

[दोनों का भीतर जाना।]

नीलम : ठाकुरजी का चरणामृत पिलाकर मेरा सिर ऐसा दबाया कि···। मैं बिल्कुल ठीक हूं।

मां : तुम्हारे पतिदेव आए थे।

नीलम : हां, मैं आंख मूंदे सुन रही थी। आप मेरी ओर से बोल रही थीं। उन पर कोई असर नहीं। मांजी, आशीर्वाद दीजिए, दिल्ली वाली नौकरी इन्हें मिल जाए।

मां : उससे क्या अन्तर पड़ेगा बहू ? सेठी साहब की कृपा से नौकरी मिलेगी, हमेशा उनका डर बना रहेगा।

नीलम : कोई और उपाय नहीं है।

मां : उपाय है।

[कपड़े बदले शोनू का आना।]

शोनू : दादी, आवो, मेरे साथ खाना खाओ।

नीलम : बच्चे हो क्या ?

शोनू : मैं क्या हूं, बताओ न ? कोई नहीं बताता। टीचर न डैडी, न ममी।

नीलम : यह तेरे जानने के लिए नहीं है।

मां : यही इसके जानने के लिए है, 'मैं कौन हूं ?'

नीलम : मांजी ! इसका दिमाग और मत खराब कीजिए।

शोनू : मुझे अमेरिका जाना है—न्यूक्लियर इंजीनियर बनने, जबकि मुझे अपने 'न्यूक्लियस' का पता नहीं है।

मां : अच्छा, चल।

शोनू : ममी, मुझे पता है, आप मुझसे घबराती हैं। मैं आपसे बात करने लगा हूं न। कितनी प्यारी बात

है—मां-बेटे में बात। पर ममी, आप ही नहीं, बहुत सारे लोग इसे पसन्द नहीं करते । लोग 'डायलाग' नहीं, 'मोनोलाग' करते हैं।

मां : अच्छा, अब चल ।

नीलम : माफ कीजिएगा मांजी, आप इन्हें बिगाड़ रही हैं।

[मां का देखती रह जाना। भीतर से आशा का आना।]

आशा : ममी, दादी मां को क्या कहा ?

नीलम : बीच में मत बोल।

आशा : मैं कहां बोल रही हूं ?

[नीलम द्वारा आशा के मुंह पर झापड़।]

नीलम : जबान लड़ाती है !

मां : ईश्वर के लिए अब बस करो।

नीलम : ईश्वर ! ईश्वर ! हर बात में ईश्वर !

[जाना।]

मां : हे प्रभु ! क्षमा करना। बेटे, ममी हैं, मार दिया तो क्या हुआ ? अब मुस्करा दो चलो।

शोनू : दादी मां, वो शे'र क्या है···किसी ने बुलबुल से पूछा ?

मां : किसी ने बुलबुल से पूछा, दर्दे फुरकत का इलाज। शाखे गुल से गिरी, तड़पी, तड़पकर मर गई ।।

शोनू : फुरकत माने ?

मां : विरह, अलगाव। ईश्वर से अलगाव, अपने आपसे अलगाव।

शोनू : तो दर्दे फुरकत का इलाज मौत है ?

[नीलम का फिर आना।]

नीलम : अब तक यहीं डटे हो ? चलो, अपना काम करो।

मां : ये घर है, कोई दफ्तर-कारखाना नहीं कि हर वक्त काम-काम-काम । जाकर आराम करो बहू ! तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है।

नीलम : बीमार लोग आराम करते हैं।

मां : बीमार आराम नहीं कर सकता, हर वक्त बेचैन रहता है।

नीलम : मैं आपसे बहस नहीं कर सकती।

शोनू : बहस नहीं, संवाद।

नीलम : बत्तमीज !

मां : हे भगवान !

नीलम : यह मेरा घर है। ये मेरे बच्चे हैं। यह मैं हूं। मेरी घर-गृहस्थी है। मैं जैसा चाहूंगी, वैसा ही करूंगी मैं। हमें पास्ट में नहीं, फियूचर में जीना है।

मां : पर रहना-जीना कहां है ?

[बाहर से प्रकाश का आते हुए।]

प्रकाश : क्या हो रहा है ? शोनू ! आशा ! क्या हुआ बेटी ? तुम सब लोग इस तरह चुप क्यों हो ?

शोनू : चुप ही रहना बेहतर होता है डैडी ! आप लोग बड़े समझदार हैं, चुप रहते हैं।

प्रकाश : रुको। कहां जा रहे हो ?

शोनू : बाथरूम, जहां आप चले जाते हैं। हर बात में सिर्फ इतना ही कहते हैं, 'ओ आई सी।'

[जाना।]

नीलम : सुन लिया न ? कितना व्यंग है इसकी जबान में। ऐसा यह पहले नहीं था। और आपकी यह लाड़ली बेटी, देखिए, कैसी जमी बैठी है। कैसे देख रही है। (पुकारना) नाथू ! नाश्ता टेबल पर लग गया या

नहीं ? (जाते हुए) बिना मेरे कहीं नहीं हो सकता। एक दिन मैं न रहूं तो पता चल जाए।

[जाना।]

प्रकाश : बाहर खड़ा सब कुछ सुन रहा था।

मां : फिर ऐसे क्यों अनजान बन रहे थे बेटे ?

आशा : आप घर में भी एक चतुर अफसर बने रहते हैं।

प्रकाश : नौकर को 'न्यूट्रल' रहना होता है।

मां : मैं तुम्हारे बच्चों को बिगाड़ रही हूं। ये मेरे नहीं हैं।

[प्रकाश का हंसना।]

आशा : शोनू भइया ममी से संवाद की बात कर रहे थे। मेरे भी मुंह से सिर्फ इतना ही निकला कि ममी, आप अकेली ही बात करती हैं। बस, मुझ पर बरस पड़ीं। ये कोई बात हुई भला !

प्रकाश : अरे···रे···रे···तुम लोग सचमुच बहुत बोलने लगे।

आशा : बोलना पड़ा तो बोलने लगे।

प्रकाश : 'ओ आई सी।'

आशा : आपको सिर्फ इतना ही बोलना है, ओ आई सी। इसके अलावा आपको फुर्सत कहां ? बोलने का काम ममी को दे दिया।

प्रकाश : अगर हम दोनों बोलें तो तुम लोग कैसे बोलोगे ?

आशा : यही बात तो भइया ममी से कर रहा था। आपस में हम सब क्यों नहीं बोलते ? क्यों एक-दूसरे से डरते हैं ? हर बात में मांजी को बीच में क्यों खींच लिया जाता है ?

प्रकाश : अरे बाप रे, बाप ! मैं इतने बड़े सवाल का

जवाब नहीं दे सकता। (पुकार आती है।) चलो-चलो, ममी की पुकार।

आशा : मैं नहीं जाऊंगी।

प्रकाश : ममी और नाराज होगी।

आशा : होने दो।

प्रकाश : जिद नहीं करते।

आशा : ममी क्यों जिद करती हैं ? सब कुछ ममी हैं क्या ? नहीं, सब कुछ केवल ईश्वर है, ठाकुरजी।

[नीलम का आवेश में आना।]

नीलम : क्या कहा ? फिर से कह।

आशा : कहूंगी। सब कुछ ममी नहीं हैं। सब कुछ केवल ईश्वर है, ठाकुरजी हैं।

नीलम : बेवकूफ ! (झापड़) तेरी यह हिम्मत ! मुंह तोड़कर रख दूंगी। भक्तिन नहीं बनना है। आधुनिक लड़की बनना है तुझे। कान खोलकर सुन ले—तुझे माडर्न बनना है, मिडीवियल नहीं। भूत में नहीं, 'भविष्य' में रहना है।

आशा : ममी, मेरा हाथ छोड़िए।

नीलम : मैं बनाऊंगी तुझे, जैसा मैं चाहूंगी।

मां : इतना घमण्ड ठीक नहीं।

नीलम : आप दूर हटिए मांजी।

मां : जब बीच में हूं तो दूर नहीं हट सकती।

[संघर्ष। मां को चोट।]

प्रकाश : मां ! मां ! नीलम, यह क्या किया ?

नीलम : बीच में आ गई, मेरी क्या गलती !

मां : कोई बात नहीं। चोट नहीं लगी।

तृतीय अंक

पहला दृश्य

[मंच पर रात के दो बजे।]

नीलम : अब तक नहीं सोए ? देखिए, दो बज गए। यह क्या कर रहे हैं ? आपको नींद नहीं आई या···

प्रकाश : यह फाइल पूरी कर सेठी साहब को देनी थी।

नीलम : मुझसे नाराज हो ?

प्रकाश : जब मां तुमसे नाराज नहीं हुई तो मैं क्या ?

नीलम : मांजी बहुत समझदार हैं। उस पूरे संयोग को उन्होंने बारीकी से देखा। उलटे मुझे समझाती रहीं।

प्रकाश : पर तुमने मां से माफी नहीं मांगी ?

नीलम : उसकी कोई जरूरत ही नहीं पड़ी।

प्रकाश : 'आई सी'।

नीलम : क्या सोच रहे हो ?

प्रकाश : इलाहाबाद में पढ़ता था। रात को नींद नहीं आती थी। इलाहाबाद के बड़े चर्च से एक, दो, तीन, चार बजने का जो संगीत उभरता था, अद्‌भुत शान्ति मिलती थी। मां एक प्राइमरी स्कूल में कुल अस्सी

रुपये मासिक तनखाह पर थी। चालीस रुपये मुझे देती। बाकी चालीस में, एक बुआजी, एक वृद्ध मामाजी और एक पति परित्क्यता, दूर के रिश्ते की कोई ताईजी। मां मुझे पत्र लिखती और यही दोहराती रहती, हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम नाम। मां ने मुझ पर कभी नहीं थोपा कि मैं पूजा-पाठ करूं। मां ने हमेशा यही कहा—बेटे, तुम्हें जो अच्छा लगे, वही करना। जिस रास्ते पर खुद चलना चाहो उसी पर चलना। (सहसा) अरे, तुम तो सो गईं ! अजीब स्त्री है ! सबकी चिन्ता अपने ऊपर। चाहती है, सब इसी के अनुसार हो। मेरी मां ने मुझे नहीं बनाया। यह कहती है—मैं बनाऊंगी अपने बच्चों को आधुनिक, कर्मठ, महत्त्वाकांक्षी। पर अजीब खेल है—दोनों बच्चे मां से आकृष्ट हैं। नीलम को यह बर्दाश्त नहीं। जब देखो तब वही तीनों। तीनों की दोस्ती। हम दो अकेले।

[मंच पर प्रातःकाल का होना। शोनू का खड़ा गिटार बजाना। मां और आशा का गिटार संगीत पर रामायण की चौपाई का गायन।]

बिनु संतोष न काम नसाही।
काम अछत सुख सपनेहु नाहीं॥
राम भजन बिनु मिटहि न कामा।
भूमिहीन तरु कबहू कि जामा॥

[प्रकाश और नीलम देखते हैं। नीलम का परेशान होना।]

प्रकाश : गिटार पर रामायण ! तुम्हें खुश होना चाहिए।

नीलम : शोनू पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती।

[प्रकाश का चुप खड़े रहना। नीलम का जाना। शोनू के हाथ से गिटार छीनना। नीलम के पीछे-पीछे शोनू और उसके पीछे मांजी।]

नीलम : इस उमर में पूजा-पाठ ठीक नहीं। साठ साल की उम्र के बाद धर्म-कर्म ठीक है। तब कोई मुश्किल नहीं पैदा होती।

[मां का हंसना।]

नीलम : मतलब यह कि इस उम्र में पूजा-पाठ इसमें 'कांप-लेक्स' पैदा करेगा। इसका 'नार्मल ग्रोथ' रुक जाएगा। इसकी पर्सनाल्टी 'स्पिलिट' हो जायेगी। देखिए, मैं समझाती हूं आपको।

मां : इतनी अंग्रेजी तो जानती ही हूं। इस अंग्रेजी ने क्या गजब ढाया है—इसका भी ज्ञान है, ईश्वर कृपा से।

नीलम : हर चीज को ईश्वर कृपा से क्यों जोड़ती हैं ?

मां : हर चीज उसी से जुड़ी है।

नीलम : इसका सबूत क्या है ?

मां : सत्य को सबूत की जरूरत नहीं होती।

नीलम : सबूत के बिना कुछ भी सत्य नहीं होता—यह वैज्ञानिक सत्य है।

मां : झूठ के लिए सबूत की दरकार होती है।

नीलम : धर्म, ज्ञान, श्रद्धा, विश्वास ये सब बुढ़ापे की चीजें हैं।

मां : बच्चों को मशीन बनाना चाहती हो ?

नीलम : समय की मांग है।

मां : पशु बनाना चाहती हो ?

नीलम : जी हां, किसी हद तक···।

मां : मशीन और पशु की कोई हद नहीं होती।

नीलम : यह धर्म, ज्ञान, गीता-रामायण, पिछड़ेपन, यहां तक कि देहातीपन का सबूत है। माफ कीजिए, तरक्की के लिए धर्म नहीं, शक्ति चाहिए।

मां : यह अंग्रेजी गुलामी बोल रही है, तुम्हारे भीतर से। कान खोलकर सुन लो, धर्म शक्ति है।

नीलम : पैसा है पैसा।

[शोनू का आना और देखते रह जाना।]

मां : पैसा से सब कुछ खरीद लो न।

शोनू : डैडी, आप चुपचाप खड़े हैं।

मां : यह चुप्पी महाकाल है।

शोनू : डैडी ! बोलिए।

प्रकाश : मेरी समझ में कुछ नहीं आता। मैं जो नहीं हूं—वही होना चाहता हूं—पर वह हो नहीं सकता।

शोनू : क्यों ?

प्रकाश : अपने घेरे से बाहर नहीं निकल सकता।

शोनू : इतना डर ?

प्रकाश : डर के अलावा और कुछ नहीं, यही हमारा समय है—हे ईश्वर।

नीलम : क्या ?

मां : हारे को हरि नाम।

प्रकाश : शायद।

शोनू : शायद-शायद, जहां कुछ भी डेफनिट नहीं वहां मुझे इंजीनियर बनाना चाहते हैं—मैं क्या हूं—मुझे

यह पता नहीं। मुझे अमेरिका भेजना चाहते हैं।

नीलम : शोनू !

शोनू : हू इज शोनू ? ह्वाट इज शोनू ?

मां : मेरा बेटा।

[मां की गोद में रो पड़ना। गांव वालों का वही दृश्य दिखना।]

स्वर : साढ़े तीन लाख नहीं पूरे पांच लाख। आप और सेठी साहब ने डेढ़ लाख···।

स्वर : हमारा न्याय कौन करेगा हुजूर ?

दूसरा दृश्य

[मंच पर संध्या। नीलम और प्रकाशचन्द्र। प्रकाशचन्द्र कुछ पढ़ रहे हैं।]

नीलम : डियर, तुम्हारी विदेश यात्रा कैसी रही, कुछ बताया ही नहीं ? क्या बात है ? तुम्हारे जाने के बाद, सेठी साहब को धन्यवाद देने गई थी। बड़े समझदार हैं। हर चीज को अपने स्वार्थ से देखते हैं।

प्रकाश : यही बड़े समझदार हैं ? यह संयोग की बात है—वह सेक्रेटरी हैं। मैं ज्वाइन्ट सेक्रेटरी हूं।

नीलम : तुम्हें सबसे ज्यादा मानते हैं।

प्रकाश : मैं सबसे ज्यादा कमजोर हूं।

नीलम : तुम्हें ही विदेश यात्रा पर भेजा। चलो, उन्हें धन्यवाद दे आएं।

प्रकाश : सेठी साहब के लिए देहरादून में पचीस हजार की जमीन का सौदा मुझे तीन लाख में करना पड़ा था, झूठी फाइल बनाकर।

नीलम : चलो, बाहर टहल आएं।

प्रकाश : हम बाहर ही तो हैं। घर में कहां हैं ? अब तो दिल्ली भी जाना है।

नीलम : घर दिल्ली में ही बनायेंगे। दिल्ली की नौकरी कोई आसान चीज नहीं। कुल चार महीने हिन्दुस्तान में, आठ महीने विदेश।

प्रकाश : पचास प्रतिशत सेठी साहब का होगा।

नीलम : देखा जाएगा।

प्रकाश : कौन देखेगा ?

[नीलम फिल्मी गाना की कोई बोल गुनगुनाती है।]

प्रकाश : मैं मां को धोखा नहीं दे सकता।

नीलम : मां बीच में कहां से आ गईं ?

प्रकाश : मां सदा हमारे बीच में हैं।

नीलम : देखो, ऐसा करेंगे, लखनऊ से दिल्ली पोस्टिंग होते ही माताजी को ऋषिकेश या हरिद्वार के किसी अच्छे आश्रम में रख देंगे। उन्हें किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं होगी।

प्रकाश : यह नहीं होगा।

नीलम : सुनो तो···ह्वाई यू रियक्ट लाइक दिस ?

प्रकाश : मां मेरी केवल मां नहीं है। वह मेरी जननी हैं। पिता हैं, भाई हैं, मित्र हैं, और सबसे ऊपर वह मेरी आचार्या हैं।

प्रात: चार बजे मां उठती थीं। भजन गाते हुए घर भर में झाड़ू लगाती थीं। मैं भी उठकर गाने लगता था। महीने में कई ऐसे पर्व के दिन आते, जब मां सवेरे उठकर नदी-स्नान को जातीं। उनकी उंगली पकड़कर मैं साथ हो लेता। मां के साथ उनका पल्ला पकड़ काशी, अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, कुंभमेला, गंगास्नान—ऐसी अनेक यात्राएं

कीं। अनुभव और प्रसादी मिलती। घर में प्रीति-भोज होता। कोई वृक्ष फलता तो सबसे पहले आस-पड़ोस में बांटा जाता।

नीलम : ये कृषि सभ्यता के दिनों की बातें हैं।

प्रकाश : मां ने कभी मुझे डांटा तक नहीं। कभी कोई आज्ञा नहीं दी। अपने चरित्र और आचरण से मां मेरी आचार्या बनीं।

नीलम : तुम्हारी भाषा मेरी समझ में नहीं आ रही।

[प्रसाद लिए मां का आना।]

मां : लो, प्रसाद लो। आज ठाकुरजी के प्रसाद में अंगूर हैं। अंगूर की बेल में नए फल लगे हैं !

नीलम : मांजी, मैं भी पूजा करना चाहती हूं। पूजा कैसे की जाती है ? ठाकुरजी को भोग कैसे लगाया जाता है ?

मां : अरे, पूजा से पहले तुम्हें तो सबूत चाहिए भगवान का। भगवान भाव है। भाव अपना आचरण है बहू ! कैसा समय है, लोग 'मैटर आफ फैक्ट' होना चाहते हैं। धर्म क्या मैटर आफ फैक्ट नहीं ? क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है ?

प्रकाश : मैं धर्मनिरपेक्ष हूं। मुझे नौकरी करनी है।

नीलम : इनको समझाइए न मांजी। सेठी साहब की तरह···।

प्रकाश : मां सब समझती हैं।

मां : एक ओर राम की जय, दूसरी ओर रावण की जय—दोनों एक साथ नहीं चलता।

नीलम : मां-बेटा दोनों की बात मेरी समझ में नहीं आती।

मां : तुम्हारा काम समझना है, समझाना नहीं।

प्रकाश : समझने के लिए आधार चाहिए, जिसे विश्वास कहते हैं।

नीलम : मांजी, मुझे थोड़ा 'गाइड' कर दीजिए न।

मां : 'गाइड बुक' से आजकल का इम्तहान पास किया जा सकता है। भाव वही पा सकता है, जो अपने अभाव को देखे।

नीलम : मुझमें क्या अभाव है ?

मां : खुद देखो बहूरानी !

[मां का जाने लगना।]

नीलम : रुकिए मांजी !

मां : ठाकुरजी को पंखा झलना है। उन्हें गर्मी लग रही है।

नीलम : मैं पंखा चला आती हूं।

मां : बिजली के पंखे से ठाकुरजी को हवा नहीं लगती। फिर ठाकुरजी को झूला झुलाना है। गाऊंगी, तभी ठाकुरजी विश्राम करेंगे।

नीलम : ठाकुरजी तो पत्थर की मूर्ति हैं।

प्रकाश : नीलम ! ठाकुरजी भाव हैं। हम अभाव हैं। हमारा अभाव कट जाए यही पूजा है।

मां : इसे समझाओ।

प्रकाश : इनके समझने के लिए ये पत्रिकाएं हैं। (दिखाना) फिल्म, हत्या, अपराध, फैशन, माडर्न वूमेन···।

नीलम : मैं समय के साथ चलना चाहती हूं।

प्रकाश : चाहना ठाकुरजी नहीं है, होना ठाकुरजी है। ठाकुरजी पत्थर की मूर्ति नहीं हैं। हम अपनी जड़ से उखाड़ दिये गये हैं, तभी हम मनुष्य से पत्थर होते जा रहे हैं। तभी हम भगवान को भी पत्थर

समझने लगे हैं।

नीलम : मुझे जब जरूरत होगी, पूजा-पाठ कर लूंगी।

प्रकाश : जरूरत ! जरूरत !!

नीलम : देखो, जब मुझे जरूरत थी तो हर मंगलवार को पूरे डेढ़ साल तक फास्ट किया कि नहीं ?

प्रकाश : वह फास्ट था, पर उपवास नहीं था, जिसे व्रत कहते हैं।

नीलम : फास्ट और व्रत में फर्क क्या है ?

प्रकाश : फास्ट माने डाइटिंग—मोटापा कम करने के लिए। व्रत माने अपनी भूख-प्यास, लालच से ऊपर उठना। जो हमें बहुत प्रिय है, उसे ईश्वर के चरणों में अर्पित करना। नतसिर होकर अपने अहंकार का शमन करना, यही ठाकुरजी की पूजा है। हम भाव बने रहें, पदार्थ न हो जाएं, यही मेरी मां का भजन है।

नीलम : तुमने मुझे ये बातें कभी नहीं बताईं।

प्रकाश : इसकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि इसका लाभ नहीं था। मैं राम और रामायण दोनों में एक साथ विश्वास नहीं कर सकता। रावण की लंका में फायदे ही फायदे हैं। मैं नौकर हूं—वह भी सरकारी नौकर। वह भी अंग्रेजों की दी हुई सरकार का नौकर। जी हुजूर ! जो हुकुम सरकार।

चतुर्थ अंक

पहला दृश्य

[मंच पर संध्या। मां आशा और शोनू के साथ। तीनों मिलकर कोई खेल कर रहे हैं। नाथू का आना।]

नाथू : सुनो···सुनो·· सुनो···।

शोनू : क्या है ?

नाथू : सेठी साहब आ रहे हैं।

मां : चलो, हम लोग भीतर चलते हैं।

नाथू : अरे, अभी थोड़े ही आ रहे हैं। मतलब थोड़ी देर में आएंगे। साहब और मेम साहब दोनों गए हैं, बड़े साहब को लेने।

शोनू : धत्तेरे की ! हमारा खेल चौपट कर दिया।

मां : अच्छा-अच्छा, हम दूसरा खेल करते हैं। आशा ! शोनू !! ऋग्वेद का वह मंत्र पढ़ो···।

दोनों : इयं मे नाभिः।

मां : क्या मतलब ?

शोनू : यह शरीर मेरी नाभि है।

दोनों : इमे में देवा।

शोनू : जो कुछ मेरे चारों ओर दीखता है—सब देव है—परमेश्वर है।

तीनों : अयमस्ति सर्वः। मैं सर्वरूप हूं। मुझमें सारी सृष्टि समाई हुई है।

[सहसा बाहर से नीलम का आना।]

मां : क्या है बहू ? इतना घबराई हुई क्यों हो ?

नीलम : सेठी साहब आ रहे हैं। मांजी, वह आपसे ही मिलने आ रहे हैं। आप कृपा कर उनकी बातें सुनियेगा। जवाब मत दीजिएगा। आप बात कहिएगा, पर उनकी बात नहीं काटिएगा। बच्चे ! तुम लोग यहां बैठोगे। तुम्हारे हाथों में अंग्रेजी किताबें होंगी। मैं जब इशारा करूंगी, मां को लेकर अन्दर चले जाना।

मां : ये सब क्या है ?

नीलम : मांजी, हाथ जोड़ती हूं। आपके पैरों पड़ती हूं। आपके बेटे के भविष्य का प्रश्न है।

[सेठी और प्रकाश का आना।]

सेठी : मांजी को प्रणाम। आपका बेटा बहुत बड़ा अफसर होकर दिल्ली जाने को है। बधाई ! बधाई !!

मां : सब ईश्वर की कृपा है।

सेठी : ठाकुरजी का सब कुछ है। वही सबको खिलाते हैं। पिलाते हैं। सबको जिन्दा रखे हुए हैं। फिर हम ठाकुरजी को भोग कैसे लगाते हैं।

मां : ठाकुरजी को कभी किसी किसी चीज की कोई जरूरत नहीं। जरूरत तो हमें है। हम हैं भूखे, प्यासे, थके-हारे। अभाव हममें है। उनके भाव

से हम अपने अभाव को भरते हैं।

सेठी : समझा नहीं मांजी।

मां : वही जिसे समझाए वही समझ सकता है।

सेठी : मैं तो घर में उसी की पूजा-पाठ करता हूं।

मां : और बाहर ?

सेठी : देखिए जी, घर और बाहर में अन्तर तो रखना ही पड़ता है।

मां : धर्म में अन्तर की गुंजाइश नहीं है।

नीलम : मांजी, इनकी बात समझिए।

सेठी : ईश्वर को आपने देखा है ?

मां : उसे कौन देख सकता है ? आप भी बच्चों की तरह बातें करते हैं।

नीलम : मांजी, आप इधर आ जाइए।

सेठी : ईश्वर जब देखा ही नहीं जा सकता तो उसकी सेवा कैसी ?

मां : सेवा तो अहंकार का विसर्जन है।

सेठी : जी नहीं, इससे अहंकार और बढ़ता है।

मां : अगर अहंकार से सेवा की जाएगी तो···।

नीलम : मांजी, सुनिए। इधर आ जाइए।

[अलग।]

नीलम : आप बोलिए नहीं।

मां : अपने कमरे में जाती हूं।

नीलम : नहीं। यहीं चुपचाप बैठना होगा।

मां : क्या ?

नीलम : सेठी साहब से बहस मत कीजिए। इनकी हां में हां मिलाइए।

मां : क्यों ?

नीलम : नहीं तो बड़ा नुकसान हो सकता है।

मां : अन्दर चली जाती हूं।

नीलम : नहीं, साहब आपसे ही मिलने आए हैं। चुपचाप उनकी बात सुनिए।

मां : जो हूं, वही एक हूं। दो नहीं हो सकती।

नीलम : हमारे लिए, अपने बेटे की तरक्की के लिए मांजी। आपको कुछ करना नहीं है। बस, उनकी हां में हां मिलाते रहना है।

मां : मुझसे यह नहीं हो सकता।

नीलम : अच्छा, आप चुप रह सकती हैं न ?

मां : यहां से चली जाती हूं।

नीलम : आपको यहीं बैठना है और चुपचाप बैठना है।

मां : जो ठाकुरजी की इच्छा होगी।

नीलम : कोई ठाकुर-फाकुर नहीं।

मां : हे कृपा सिन्धु भगवान !

नीलम : मुंह बन्द। चलिए, खामोश बैठिए।

आशा : 'दिस इज टू मच।'

शोनू : दिस इज इनहूकमन।

नीलम : 'कीप क्वायट'।

[पास आना।]

सेठी : आइए मांजी, आप कहां चली गई थीं ?

नीलम : जरा तबियत ठीक नहीं है। दवा लेने गई थी। बोलने से कभी-कभी थोड़ी दिक्कत हो सकती है।

प्रकाश : क्या ?···मां ! क्या बात है ?

आशा : मां ! मांजी !

शोनू : चलो यहां से, उठो।

[नीलम उन्हें हटाती है।]

सेठी : पूजा-पाठ से नींद अच्छी आती है। तनाव कम हो जाता है। जिसके पास फुर्सत है वही धर्म, अध्यात्म, पूजा-पाठ के बारे में सोच सकता है। मां जी चुप क्यों हैं ?

नीलम : जी, आपसे सहमत हैं।

सेठी . मैंने काफी पढ़ा है। बड़े-बड़े साधू-महात्माओं को सुना है। मांजी को क्या हो रहा है ?

प्रकाश : मां !

शोनू : दादी मां !

आशा : मां !

प्रकाश : क्या हो गया मां ? मां ! (देखकर) मां ! मां !! मां चली गई। हे ईश्वर ! यह क्या हो गया ?

नीलम : ओ···नो···।

सेठी : ताज्जुब है ! 'विदिन सेकेण्ड' क्या हो गया ?

[मां की मृत्यु पर सब सन्न। दोनों बच्चों का मां पर रोते हुए बिछ जाना। पीछे नाथू-गोपी का गायन।]

किसी ने बुलबुल से पूछा
दर्दे फुरकत का इलाज
शाखे गुल से गिरी
तड़पी
तड़पकर रह गई॥

दूसरा दृश्य

[दोपहर। बीच में नीलम, दाएं-बाएं आशा, शोनू, नाथू, गोपी।]

नीलम : क्या मुझे दुःख नहीं मांजी के इस तरह चले जाने का ? सिर्फ तुम्हीं लोगों की थीं वो ?

शोनू : यू शटअप ममी !

नीलम : यही मांजी ने सिखाया था ? (विराम) अपनी चिन्ता करो। अस्सी फीसदी से कम नम्बर मिले तो दिल्ली में एडमीशन नहीं मिलेगा।

शोनू : सेठी साहब की मदद से सब कुछ हो जाएगा।

नीलम : शोनू !

आशा : चीखिए नहीं।

नीलम : अपनी खुशी से चीख रही हूं ? तुम्हारे पापा की पोस्टिंग दिल्ली हो गई है। हमें यहां से जाने की तैयारी करनी है। मांजी के लिए कब तक रोओगी ? यही रोना-धोना सिखाया है मां ने ?

आशा : दादी मां के लिए रो भी नहीं सकते ?

नीलम : अपने पण्डितजी ने बताया है, हरिद्वार में मांजी के अस्थि-विसर्जन के साथ ठाकुरजी का भी विसर्जन कर दिया जाए।

शोनू : वह पण्डित मूर्ख है। लालची है। ठाकुरजी का कभी विसर्जन नहीं होता।

नीलम : पर वह मूर्ति है कहां ?

आशा : आपसे मतलब ?

नीलम : मैं उसे अब अपने घर में नहीं रहने दूंगी। वह सारा चक्कर मांजी तक था।

[इस पूरे अनुक्रम में नीलम का दादी के कपड़े, सामान तहाकर रखना।]

नीलम : यह है सब कुछ दादी का सामान, चार साड़ियां, दो ब्लाउज, दो पेटीकोट, रामायण, इतना चावल, इतना बतासा।

आशा : चावल नहीं अक्षत। बतासा नहीं प्रसाद।

नीलम : जो भी हो। इसे किसी को दे देना है।

शोनू : (लेकर) इसे हम अपने पास सुरक्षित रखेंगे।

नीलम : नाथू-गोपी, समझाओ इन्हें।

नाथू : अब मांजी बिना हम खुद यहां नहीं रहेंगे।

गोपी : हमारे सामने मांजी इस तरह चली गईं।

[रो पड़ना।]

नीलम : तुम सबका मतलब क्या है ?

नाथू : हम नट-नटी होकर आपके यहां नौकर रहे। सोचा था—मांजी की वजह से साहेब ऊ साढ़े तीन लाख की सरकारी 'ग्रांट' हमरे गांव के दिलाय देइ हैं।

शोनू : साढ़े तीन लाख नहीं, पूरे पांच लाख की सरकारी 'ग्रांट'।

[प्रकाश का आना।]

शोनू : कांग्रेचुलेशन्स।

प्रकाश : मैंने मना कर दिया।

नीलम : क्या ?

प्रकाश : दिल्ली की नौकरी।

नीलम : क्या ?

प्रकाश : मुझे ऐसे तरक्की नहीं चाहिए।

नीलम : ह्वाट आर यू टाकिंग ?

प्रकाश : 'न्यूट्रल' रहने की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, पता नहीं था।

नीलम : प्रकाश ! तुम होश में हो ?

प्रकाश : अभी तो होश में आया हूं। अब मैं 'न्यूट्रल' धर्म-निरपेक्ष नहीं हूं। ठाकुरजी कहां हैं ? बोलो, कहां हैं ? मेरे बच्चे ! नाथू, कहां हैं ठाकुरजी ?

नाथू : कहां नहीं हैं ? सब जगह तो हैं सरकार।

[आशा-शोनू का जाना।]

नाथू : अब हम भी जाइ रहे हैं सरकार। जब मांजी के रहते हमें 'ग्रांट' नहीं मिली तो अब क्या रहि गया हुजूर ?

[जाना। ठाकुर के पास चारों।]

प्रभुसन कहियो दंडवत
उन्हें कहें कर जोरि।
बार बार रघुनाथ कहि
सुरत करायो मोरि।।

[प्रकाश और नीलम का भी इस दृश्य में आना। तभी गांव के लोगों का मंच पर आना। इस बार इनके सामने शोनू।]

ललई : हमें छोड़कर मांजी चली गईं।

शोनू : मैं हूं तुम सबके साथ।

नाथू : भइया !

प्रकाश : शोनू !

[गायन ।]

कथा विसरजन होत है
सुनो वीर हनुमान ।
राम लखन सिय जानकी
सदा करो कल्याण ।।
जो जन जहां से आयहू
कथा सुनी मन लाय ।
अपने अपने भवन को ।
हरषि जाहु सुख पाय ।।

[पर्दा गिरता है ।]

□□